कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, अक्टूबर 2025 | वर्ष 3, अंक 24, पृष्ठ 4

NIRF रैंकिंग में दिल्ली विवि में राम लाल आनंद महाविद्यालय को 30वां स्थान

देश के टॉप 100 महाविद्यालयों में RLAC

आस्था त्रिपाठी

नई दिल्ली। हमारे लिए गर्व का क्षण है कि 4 सितम्बर 2025 को घोषित राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ) 2025 में राम लाल आनंद महाविद्यालय ने ऑल इंडिया स्तर पर 90वां स्थान प्राप्त किया है। साथ ही दिल्ली विश्वविद्यालय के महाविद्यालयों में हमारा महाविद्यालय 30वें स्थान पर रहा है। यह उपलब्धि संस्थान की बढ़ती शैक्षणिक गुणवत्ता को प्रमाणित करती है। वहीं देश में एक मजबूत शैक्षिक पहचान दिलाती है।

एनआईआरएफ का मूल्यांकन महाविद्यालय की वेबसाइट, सोशल मीडिया और सार्वजनिक मंचों पर उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर किया गया। यह हमारे लिए बड़ी बात है कि महाविद्यालय की पारदर्शिता, उपलब्धियां और गतिविधियां इतनी सशक्त हैं कि वे खुले स्रोतों के आधार पर भी राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त कर रही हैं।

प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता का कहना है कि यह रैंकिंग शिक्षकों की निष्ठा, विद्यार्थियों की मेहनत और महाविद्यालय परिवार के सामूहिक प्रयास का परिणाम है। महाविद्यालय ने पिछले वर्षों में शोध गतिविधि, अकादमिक उत्कृष्टता, विद्यार्थी–शिक्षक संवाद और सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्रों में प्रगति की है। खेल, सांस्कृतिक गतिविधि और नवाचार में भी विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महाविद्यालय का नाम रोशन किया है।

महाविद्यालय का विजन समग्र शिक्षा का रहा है, जहां विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम तक सीमित न कर व्यक्तित्व विकास, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक सरोकारों को भी प्रोत्साहित किया जाता है। इसी कारण यहां से निकले विद्यार्थी विभिन्न क्षेत्रों में अहम योगदान दे रहे हैं। इससे पहले महाविद्यालय को नैक ए प्लस ग्रेड मिल चुका है, वहीं आईएसओ से दो सर्टिफिकेट मिले हैं। पिछले कुछ दिनों में संस्थान को यह तीसरी उपलब्धि मिली है। प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने इस उपलब्धि के लिए शिक्षकों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि आने वाले वर्षों में हमारा लक्ष्य इस रैंकिंग को और बेहतर बनाना है।



आरएलएसी के चेयरमैन बने डॉ. जिगर इनामदार

कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) की गवर्निंग बॉडी के नए चेयरमैन डॉ. जिगर इनामदार बनाए गए हैं। इससे पहले वह रामानुजन कॉलेज के चेयरमैन रह चुके हैं। साथ ही विश्वविद्यालय की ग्लोबल स्टडीज कमेटी के सलाहकार सदस्य हैं। वह लंबे समय से युवा मागदर्शक और सामाजिक नेता के तौर पर काम कर रहे हैं। शिक्षा, शासन और राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पित होकर जमीनी स्तर पर कार्य करते हैं।



लोक प्रशासन में पीएच.डी. करने वाले डॉ. जिगर इनामदार 20 से वर्षों से विभिन्न विवि, सरकारी निकायों और संगठनों के जरिए देश और समाज के लिए कार्यरत हैं। गुजरात के वडोदरा निवासी डॉ. जिगर इनामदार बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव विवि में नेतृत्वकारी भूमिका निभाई है। विदेश मंत्रालय के अधीन काम करने वाली भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के सलाहकार की जिम्मेदारी का निर्वहन किया है। वह सामाजिक कार्यों के लिए जाने जाते हैं। इसी कड़ी में स्वामी विवेकानंद गुजरात राज्य युवा बोर्ड को पुनर्जीवित किया। पूरे राज्य में 15 हजार से अधिक स्वामी विवेकानंद युवा केन्द्र स्थापित किए। केन्द्रों के जरिए सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ आम लोगों तक पहुंचाने में भूमिका अदा की। बोर्ड के साथ उन्होंने मुख्यमंत्री से सप्त संकल्प अभियान शुरू कराया। इसमें सभी के लिए स्वच्छता, आरोग्य, खेल, स्वावलंबन, ऊर्जा, सेवा और समर्पण का अभियान चलाया।

डॉ. जिगर इनामदार अनेक संस्थाओं से जुड़कर देश और समाज के लिए काम कर रहे हैं। इसी में शामिल है समन्वय प्रतिष्ठान, जिसके संस्थापक के तौर पर उन्होंने युवाओं को इंटर्नशिप से जोड़ा। संवर्धन पहल के रूप में यूपीएससी, जीपीएससी एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए कॅरिअर मार्गदर्शक, कौशल विकास और कोचिंग का मंच प्रदान किया। अपने सार्वजनिक जीवन को नया मोड़ देने में विजन इंडिया फाउंडेशन और राष्ट्रम से जुड़े मित्रों का प्रभाव मानते हैं। साथ ही समाज के अंतिम तबके के उत्थान के लिए 24 घंटे में से दैनिक एक घंटा या साप्ताहिक सात घंटे का समर्पण करने की वकालत करते हैं।

डॉ. जिगर इनामदार मानते हैं कि मनुष्य की समाज के प्रति कुछ जिम्मेदारियां हैं। आज के समय में दूसरों की जिम्मेदारियों पर ज्यादा बात होती है, पर खुद की जिम्मेदारी पर नहीं। खुद की जिम्मेदारी पर बात करना आज की बड़ी जरूरत है। सरकारों की जिम्मेदारी, कॉरपोरेट सोशल रिस्पांसबिलिटी सहित इंडीविजुअल सोशल रिस्पांसबिलिटी पर भी बात हो। समन्वय प्रतिष्ठान इसी उद्देश्य के तहत काम करता है।

राम लाल आनंद महाविद्यालय का चेयरमैन बनने पर पिछले दिनों जब डॉ. जिगर इनामदार महाविद्यालय आए तो प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता और शिक्षकों ने स्वागत किया। एक दूसरे से संवाद हुआ। साथ ही महाविद्यालय और अधिक प्रगति के पथ पर आगे बढ़े, इस संकल्प को दोहराया।

डांस को पहचान बनाने का मौका

भूमिका

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय में 28 अगस्त 2025 को इल्यूजन सोसाइटी ने ओरिएंटेशन और चयन प्रक्रिया रखी। समिति की सह संयोजिका शालिनी स्वामी ने बताया कि डांस को दिल और आत्मा से प्रस्तुत करें। यहां डांस से पहचान बनाने का मौका मिलता है।

चयन प्रक्रिया का हिस्सा 10 से 11 विद्यार्थी बने। शालिनी स्वामी और साहिल हुसैन ने परफॉर्मेंस की प्रस्तुति को जज किया। समिति के सदस्यों ने संयोजिका, सहसंयोजिका और ओरिएंटेशन में आए विद्यार्थियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

सेवा शर्तों से अवगत हुए शिक्षक

आयुष

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में भर्ती हुए नए संकाय से दिल्ली विश्वविद्यालय के ज्वाइंट रजिस्ट्रार डॉ. रोहन राय ने बात की। 19 अगस्त 2025 को हुई ऑनलाइन मीटिंग में उन्होंने अवकाश के नियम कायदे और अवकाश यात्रा रियायत (एलटीसी) की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ये नियम–कायदे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तहत लागू होते हैं। एक शैक्षणिक साल में अधिकतम 30 दिन की ड्यूटी अवकाश मिल सकती है। तीन साल निरंतर सेवा देने वाले को अध्ययन अवकाश देने की व्यवस्था है। यह सहायक प्रोफेसर, सहायक लाइब्रेरियन, लाइब्रेरी सहायक और स्पोर्ट और फिजिकल एजुकेशन के डायरेक्टर को मिल सकती है।

डॉ. रोहन राय ने विश्रामकालीन अवकाश के बारे में कहां कि सात साल की सेवा करने वाले स्थायी संकाय पर यह अवकाश लागू होती है। इसमें एसोसिएट प्रोफेसर या प्रोफेसर हो सकते हैं। उन्होंने शैक्षणिक अवकाश और विश्रामकालीन अवकाश के अंतर के संबंध में कहा कि शैक्षणिक अवकाश यूजीसी में नहीं लिखा है। उन्होंने एक एक कर सभी अवकाश नियमों की जानकारी दी। इन अवकाशों में आकस्मिक अवकाश, स्पेशल आकस्मिक अवकाश, अर्जित अवकाश, अर्द्ध वेतन अवकाश, प्रसूति अवकाश, पितृत्व जैसे अवकाश शामिल रहे। इस क्रम में उन्होंने अवकाश रियायत यात्रा (एलटीसी) की जानकारी दी। इन सब पर महाविद्यालय के शिक्षकों ने सवाल किए। ड्यूटी अवकाश, स्टडी अवकाश से कक्षाएं प्रभावित न हों, इससे जुड़े सवाल पूछे गए, जिसका जवाब डॉ. रोहन राय ने दिया।

आयोजन की रूपरेखा आईक्यूएसी और स्टाफ काउन्सिल की ओर से बनाई गई। इस दौरान आईक्यूएसी कोऑर्डिनेटर प्रो. प्रेरणा दीवान, प्रो. मुक्ता दत्ता मजूमदार, प्रो. एन.के. पाण्डे, प्रो. प्रदीप शर्मा, मेजर प्रो. संजय कुमार शर्मा, प्रो. अर्चना गौड़, डॉ. रीटा जैन, चंचल मैडम समेत अधिक संख्या में शिक्षक और कर्मचारी मौजूद रहे।

दिल्ली विश्वविद्यालय ने दिया ग्रीन कैम्पस–क्लीन कैम्पस का संदेश

सोनिका

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह के निर्देशानुसार आत्माराम सनातन धर्म महाविद्यालय में ग्रीन कैम्पस–क्लीन कैम्पस की शुरुआत की गई। इस अभियान में आत्माराम के साथ श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय, आर्यभट्ट महाविद्यालय, राम लाल आनंद महाविद्यालय और मोतीलाल नेहरू महाविद्यालय ने हिस्सा लिया। सभी महाविद्यालयों के एनसीसी कैडेट व एनएसएस के विद्यार्थी इसमें शामिल हुए। खेल दिवस पर अभियान की शुरुआत करते हुए दिल्ली विवि के कुलानुशासक प्रो. मनोज कुमार सिंह ने कहा कि किस तरह पर्यावरण और प्रकृति की दशा बिगड़ती जा रही हैं। ऐसे में हम सभी का फर्ज बनता है कि हम उन कारणों को कम करने की ओर बढ़ें जो हमारे आसपास की अस्वच्छता का कारण हैं।

डीसीपी साउथ कैम्पस ऐश्वर्या सिंह ने विद्यार्थियों को कहा कि स्वच्छता और हरियाली हमारे स्वास्थ्य व भविष्य के लिए जरूरी है। आत्माराम के प्राचार्य प्रो. ज्ञानतोष झा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि एनसीसी और एनएसएस समेत सभी के लिए राष्ट्र प्रथम है।

दिल्ली विवि के एनसीसी संयोजक मेजर प्रो. संजय कुमार ने कहा कि कुलपति प्रो. योगेश सिंह के निर्देशानुसार अभियान की शुरुआत की गई है, जिसका नाम है ग्रीन कैम्पस–क्लीन कैम्पस। स्वच्छता एक जीवनशैली है। इसे हम सभी को अपनाना होगा। एनसीसी कैडेट के रूप में हमारा कर्तव्य है कि हम परिसर को स्वच्छ और हरा–भरा रखने में सक्रिय भूमिका निभाएं। विवि के एनएसएस संयोजक डॉ नरेंद्र कुमार विश्नोई ने कहा– अभियान में एनसीसी, एनएसएस विद्यार्थियों का मुख्य दायित्व है।



एनसीसी–एनएसएस कैडेट्स के जरिए आत्माराम सनातन धर्म महाविद्यालय में अभियान का शुभारंभ हुआ।

मुख्य वक्ताओं के संबोधन के बाद क्लीन कैम्पस–ग्रीन कैम्पस शीर्षक नारे के साथ आत्मा राम से रैली निकाली गई। कैडेट्स और शिक्षक समाज में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से नारे लगा रहे थे। रैली श्री वेंकेटेश्वर महाविद्यालय पहुंची, जहां प्राचार्य प्रो. वी. रवि ने स्वागत किया। तत्पश्चात रैली साउथ कैम्पस से होते हुए आर्यभट्ट, मोतीलाल होते हुए राम लाल आनंद महाविद्यालय पहुंची, जहां प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने सभी का स्वागत किया। मोतीलाल के प्राचार्य प्रो. योगेश्वर शर्मा व आर्यभट्ट के प्राचार्य प्रो. मनोज सिन्हा ने विद्यार्थियों का स्वागत किया। रैली के दौरान दिल्ली विवि के ज्वाइंट प्रॉक्टर प्रो. कोटेश्वर राव, डिप्टी प्रॉक्टर डॉ. सौरभ, कैप्टन प्रो. संदीप, लेफ्टिनेंट डॉ. कामेश्वर प्रसाद शर्मा, लेफ्टिनेंट डॉ. चन्द्रशेखर निषाद, आरएलएसी की सीटीओ सुश्री साक्षी, एनएसएस ऑफिसर प्रो. कान्हाराम, डॉ. अनुराग शर्मा, डॉ. गीता देवी, डॉ. संदीप कुमार, एसएचओ साउथ रवींद्र वर्मा सहित बड़ी संख्या में शिक्षक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

सीखना–समझना और करना

जब मुझे पहली बार 'कैम्पस कनेक्ट' के लिए उपसंपादक चुना गया। तब यह मेरे लिए केवल एक जिम्मेदारी नहीं थी, यह मेरे लिए प्रिंट मीडिया में आगे बढ़ने का एक महत्वपूर्ण अवसर भी था। उपसंपादक और संपादक के रूप में काम करते हुए मैंने खबरों को संपादित करना, फोटो का चयन करना, समाचार पत्र का लेआउट खींचना, डिजाइन करना और पृष्ठ संपादन सीखा। यही काम धीरे–धीरे मुझे संपादक की भूमिका तक ले आया। संपादन की हर कक्षा में हमने सीखा कि अखबार को कैसे डिजाइन किया जाता है। वही ज्ञान मैंने संपादक के रूप में प्रैक्टिकल के तौर पर लागू किया।



भारती

समाचार पत्र का डिजाइन बनाते समय कई बार गलतियां हुईं, लेकिन उन्हीं गलतियों ने मुझे सिखाया कि सुधार कैसे किया जाता है। आज जब मैं इस पूरे काम करने के दौर को पीछे मुड़कर देखती हूं तो एहसास होता है कि यह अनुभव केवल काम तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह मेरे लिए सीखने, समझने और खुद को आगे बढ़ाने का पहला कदम साबित हुआ। काम करते समय कभी–कभी समय का प्रबंधन करना चुनौतीपूर्ण रहा, लेकिन इन्हीं कठिनाइयों ने सिखाया कि योजनाबद्ध तरीके से काम कैसे किया जाए। खुद को बेहतर कैसे बनाया जाए। भले यह अंतराल छोटा रहा, लेकिन इसने मुझे प्रिंट मीडिया की दुनिया की कार्यप्रणाली का गहरा अनुभव दिया। आज जब मेरे अंक के संपादन का काम समाप्त हो रहा है तो इसके पीछे केवल मेरी मेहनत नहीं है। पिछले अंक की संपादक मेरी सीनियर आस्था त्रिपाठी ने मुझे सिखाया कि खबरें कैसे संपादित की जाती हैं। कई सीनियर ने समाचार पत्र के डिजाइन में मेरा साथ दिया और डॉ. अटल तिवारी सर ने रिपोर्ट का संपादन करने से लेकर पत्र के डिजाइन तक की हर गलती पर समझाया कि उन्हें कैसे सुधारा जाए। उपसंपादक और संपादक के रूप में मैंने काफी कुछ सीखा। गलतियों को सुधारते हुए मेरा इस अंक के संपादक के रूप में सफर यहां समाप्त होता है, लेकिन सीखने और आगे बढ़ने की यह यात्रा जारी रहेगी।

अतुल तिवारी को राही मासूम रजा सम्मान

राहुल गुप्ता

नई दिल्ली। हिंदी साहित्य, रंगमंच और सिनेमा के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनमाने वाले अतुल तिवारी को 16वां डॉ. राही मासूम रजा साहित्य सम्मान प्रदान किया गया है। डॉ. राही मासूम रजा साहित्य एकेडमी के निर्णायक मंडल ने यह फैसला लिया। अतुल तिवारी को यह सम्मान 1 सितंबर 2025 को लखनऊ के गांधी भवन में डॉ. राही मासूम रजा की जयंती पर आयोजित समारोह में दिया गया।

डॉ. राही मासूम रजा सम्मान अतुल तिवारी की रचनात्मक उपलब्धियों का उत्सव है। साथ ही उनकी सामाजिक चेतना और संवेदनशीलता को भी रेखांकित करता है। अतुल तिवारी का जन्म लखनऊ में हुआ। वहां की सांस्कृतिक मिट्टी ने उनकी रचनात्मकता को पोषित किया। बचपन से ही उनका रुझान सिनेमा, रंगमंच और लेखन की तरफ रहा। इसी दिशा में उन्होंने शिक्षा हासिल की। उन्होंने नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा से निर्देशन और नाट्यशास्त्र की शिक्षा प्राप्त की। यहां उनकी प्रतिभा को निखरने का अवसर मिला। रंगमंच से जुड़ी संस्थाओं के साथ जुड़कर उन्होंने अभिनय, निर्देशन और अपने लेखन को निखारा।

सिनेमा जगत में अतुल तिवारी के कॅरिअर की शुरुआत 1994 में आई फिल्म 'द्रोहकाल' की पटकथा लेखन से हुई। उन्होंने कई प्रमुख फिल्मों में संवाद और कहानी लेखन का काम किया है। इनमें 2000 में आई फिल्म 'मिशन कश्मीर', 2005 में आई 'नेताजी सुभास चंद्र बोस : द फॉरगॉटन हीरो' शामिल हैं। 2014 में आई सीरीज 'संविधान द मेकिंग ऑफ द कॉन्स्टिट्यूशन ऑफ इंडिया' में उनके काम की काफी तारीफ हुई। इसके लेखक के साथ–साथ उन्होंने अभिनय के माध्यम से ऐतिहासिक संदर्भों को जीवंत बनाया।



अभिनय के क्षेत्र में भी अतुल तिवारी ने अपनी मजबूत छाप छोड़ी है। इस दिशा में उन्होंने 2009 में आई फिल्म थ्री इडियट्स, 2018 में आई मुल्क, 2010 की फिल्म आक्रोश में अपने अभिनय का लोहा मनवाया है। इसी तरह से वेबसीरीज 'महारानी' में उनकी भूमिका को दर्शकों ने काफी सराहा है। अतुल तिवारी के कॅरिअर में लेखन, संवाद, पटकथा, अभिनय और रंगमंच का संगम देखने को मिलता है।

एक तरह से 16वां डॉ. राही मासूम रजा साहित्य सम्मान अतुल तिवारी की साहित्यिक, सिनेमाई और रंगमंचीय उपलब्धियों का सम्मान है। चयन समिति ने लेखन, पटकथा लेखन और अभिनय को विशेष रूप से रेखांकित किया। यह सम्मान उनकी उस प्रतिभा को मान्यता देता है, जो साहित्य और सिनेमा के बीच सेतु बनाती है। अतुल तिवारी स्वयं को अनिच्छुक अभिनेता कहते हैं, क्योंकि अभिनय उनकी प्राथमिक इच्छा नहीं थी, पर अवसर मिलते गए और वह उन अवसरों पर गंभीरता से काम करते हुए। एक समय के बाद उन अवसरों ने उन्हें इस क्षेत्र में स्थापित कर दिया।

लेखक और अभिनेता अतुल तिवारी की महत्वाकांक्षा तहजीब के शहर लखनऊ की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत पर आधारित एक ऐसी फिल्म लिखने की है, जो शहर के सामाजिक जीवन की गहराइयों को उजागर करे। उनकी यह दृष्टि उनकी रचनाओं में निहित सामाजिक प्रतिबद्धता को सशक्त करती है।

अतुल तिवारी का योगदान केवल साहित्य और सिनेमा तक सीमित नहीं रहा। यह सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक संवेदनशीलता और मानवीय मूल्यों का प्रतीक है। डॉ. राही मासूम रजा सम्मान उनकी इस समग्र यात्रा का सम्मान है, जो उनकी तकनीकी प्रतिभा के साथ–साथ उनके विचारों की गहराई को भी रेखांकित करता है। डॉ. राही मासूम रजा साहित्य अकादमी के महामंत्री हफीज किदवई और अध्यक्ष वंदना मिश्रा हैं।

सोचिए कि हम यमुना के लिए क्या योगदान दे सकते हैं?

आज के समय में यमुना नदी पर खूब बात होती है। दिल्ली के संदर्भ में यमुना का काफी महत्व है। उसकी वर्तमान स्थिति क्या है, आप उसके बारे में विस्तार से बताइएगा।

यमुना दिल्ली के लोगों के लिए क्या है, मैं इसे एक लाइन में कहूं तो यमुना दिल्ली के निवासियों के लिए जीवन रेखा है। अगर मैं उसकी स्थिति की बात करूं तो यमुना की स्थिति अभी बहुत गंभीर है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के हिसाब से जो पानी के उपयोग के मानक हैं। मसलन–अगर हम उसे पीने के लिए इस्तेमाल करना चाहें, सिंचाई के लिए इस्तेमाल करना चाहें या स्नान के लिए प्रयोग करें। ऐसी अनेक निर्धारित श्रेणियों में इसे रखा गया है। इसे ए, बी, सी श्रेणी में विभाजित किया गया है। इसमें इन सभी मापदंडों को आंका जाता है। उसके हिसाब से पानी की गुणवत्ता देखी जाती है कि उसका निर्धारित उपयोग किस श्रेणी में आता है। यमुना नदी वजीराबाद बैराज से ओखला बैराज के बीच दिल्ली में प्रवेश करती है। वजीराबाद बैराज से ओखला बैराज के बीच 22 किलोमीटर के हिस्से में यमुना की स्थिति अच्छी नहीं है। इसमें काफी सुधार की जरूरत है। श्रेणी सी को उपचारित अपशिष्ट जल के पुनः उपयोग के बाद पीने योग्य पानी कहा गया है। उस स्तर तक हम कोशिश करके भी नहीं पहुंच पा रहे हैं। हमें कम से कम श्रेणी सी तक आने की जरूरत है। हम सभी को मिलकर इस पर चर्चा करनी चाहिए, क्योंकि यह बहुत जरूरी विषय है।

सरकार 1990 के दशक से यमुना की स्थिति को सुधारने के लिए काम कर रही है। इसके बाद भी बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इसके प्रमुख कारण क्या हैं?

अगर मैं बात करूं यमुना के उस हिस्से की, जो दिल्ली में पड़ता है। उसमें 22 नाले शामिल हैं, जो घरेलू अपशिष्ट पानी को यमुना में छोड़ते हैं। इनमें से नजफगढ़ और शाहदरा के नाले सबसे बड़े योगदानकर्ता हैं। यदि हम सीवेज ट्रीटमेंट की बात करें तो दिल्ली में 37 ट्रीटमेंट प्लांट हैं। इसमें 21 ट्रीटमेंट प्लांट ही केंद्रीय मानकों के अनुसार उपचारित पानी छोड़ रहे हैं। बाकी सभी अपशिष्ट या बिना उपचार के अथवा अधूरी क्षमता के साथ यमुना में गिराए जा रहे हैं। इसमें एक समस्या और है क्षमता की। दिल्ली जितना सीवेज उत्पन्न करती है, उसके मुकाबले हमारे पास ट्रीटमेंट करने की क्षमता पर्याप्त नहीं है। हमारे पास लगभग 96 प्रतिशत क्षमता है। इसमें 80 प्रतिशत ही पूर्ण रूप से इस्तेमाल हो पाता है। इसका कारण यह है कि कई जगह पर ट्रंक सीवर के साथ अन्य सहायक सीवर लाइनों का जुड़ाव नहीं है। कई जगह पर सीवर लाइन टूटी हुई है। दिल्ली में लगभग 500 से अधिक गैरकानूनी कॉलोनियां बसी हैं। उन जगहों पर सीवर लाइन जुड़ी नहीं हैं। उनका सारा अपशिष्ट सीधे यमुना में जा रहा है।

औद्योगिक स्तर पर देखा जाए तो दिल्ली में 51 प्रदूषणकारी उद्योग हैं। उनमें से 28 ही किसी ट्रीटमेंट प्लांट से जुड़े हैं। वे भी पूरी क्षमता में काम नहीं कर रहे हैं। इस तरह उद्योगों से निकलने वाला अपशिष्ट भी यमुना में उमिल रहा है। एक तरीके से हाउसहोल्ड सीवर और इंडस्ट्रियल वेस्ट यमुना में आ रहा है। साथ ही गैरकानूनी कॉलोनियों का वेस्ट भी शामिल है। घरों का कचरा हो या उद्योगों का कचरा, जाने अनजाने हम यमुना में बहाकर उसे प्रदूषित कर रहे हैं। इसके अलावा एक महत्वपूर्ण कारण है नदी का पर्यावरणीय प्रवाह। किसी भी नदी का प्रवाह उसकी स्वयं को शुद्ध करने की क्षमता को प्रभावित करता है। राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान के अनुसार दिल्ली में यमुना नदी का प्रवाह 23 घन मीटर प्रति सेकेण्ड होना चाहिए था। इसके बावजूद यह केवल 10 घन मीटर प्रति सेकेण्ड है। इससे पानी में ठहराव बढ़ जाता है और यमुना नदी की अपने से शुद्धिकरण क्षमता कम हो जाती है। साल 1994 में हरियाणा स्टेट इंटरेस्ट वॉटर एग्रीमेंट हुआ था। उस हिसाब से 2025 में यह फिर से रिवाइव होना है। हम यह कोशिश कर सकते हैं कि बहाव को बढ़ावा दिया जाए। अससे पानी में जो स्टेगनेंसी आ जाती है, वह कम हो जाए। पानी की एक नेचुरल टेंडेंसी होती है खुद को साफ करने की। इससे यह क्षमता थोड़ी बढ़ जाएगी। ऐसा होने से यमुना देखने में साफ दिखेगी। साथ ही जैविक रूप से भी खुद को रिवाइव करने लगेगी।



पिछले दिनों प्राइमस पार्टनर कंसल्टिंग फर्म की मैनेजर तविशी दरबारी ने राम लाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के लिए समय निकाला। उनसे साथ हिंदी पत्रकारिता एवं जन. संचार विभाग की द्वितीय वर्ष की छात्रा नंदनी वार्ष्णेय ने विस्तार से बातचीत की। इस बातचीत में यमुना नदी पर किए गए उनके काम से अनेक सवाल किए गए। उन्होंने सवालों के जवाब में यमुना की स्थिति कैसे सुधारी जाए, इसके विभिन्न पहलू सामने रखे। रेडियो तरंग पर हुई बातचीत के संपादित अंश 'कैम्पस कनेक्ट' के पाठकों के लिए यहां पेश हैं...

TARANG 90.0 FM

आपने यमुना की सफाई से संबंधित शोध किया है। उससे जुड़कर आपने लोगों और समुदायों से बातचीत की होगी। यमुना की जो सफाई के लिए काम कर रहे हैं, उनसे बात करके क्या परेशानियां सामने आई हैं?

हमारी रिपोर्ट बियॉन्ड द फ्रॉथ में नदी के किनारे रहने वाले समुदायों को केन्द्र में रखा गया है। इसमें मछुआरे, नाविक, पुजारी, विक्रेताओं की जीवन शैली पर प्रदूषण का किस तरह से प्रभाव पड़ा है, यह देखने का प्रयास किया गया है। मछुआरों की ओर से मछलियां पकड़ने में 10 प्रतिशत की गिरावट आई है। नाविकों ने बताया कि यात्रियों की संख्या लगभग 50 प्रतिशत घट गई है। पुजारियों ने कहा कि अब लोग धार्मिक अनुष्ठानों के लिए यमुना के किनारे आने से डरते हैं। यमुना किनारे जो बाजार पहले लगता था उसमें भी 70 प्रतिशत गिरावट आई है। इस तरह से वहां पर रहने वाले लोगों की जीवनशैली पर असर पड़ा है। यमुना किनारे रहने वाले लोगों की बातों को सुना जाना चाहिए। इससे उनकी परेशानियां खुलकर सामने आएंगी। आज दिल्ली में ज्यादातर लोग यमुना से अपना जुड़ाव खो चुके हैं। अपने शोध में जिन समुदायों से हमने बात की है उनकी आजीविका पूरी तरह यमुना पर निर्भर है। हमने इस काम के जरिए उन लोगों की आवाज सामने लाने की कोशिश की है, पर इस पर और ज्यादा काम किए जाने की जरूरत है।

पूरी दुनिया में प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। नदियों में प्रदूषण बढ़ता जा रहा हैं। क्या विश्व स्तर पर नदियों की सफाई के बेहतर उदाहरण हैं, जिन्हें अपना कर यमुना दी की स्थिति बेहतर की जा सकती है?

दुनिया में कई उदाहरण हैं, जहां सरकार और समुदाय ने मिलकर नदियों को पुनर्जीवित करने का काम किया है। अपनी रिपोर्ट में हमने तीन नदियों का विशेष रूप से उल्लेख किया है। उस काम से यमुना की मौजूदा चुनौतियों के समाधान के लिए सीख ली जा सकती है। इसमें पहला उदाहरण यूके की टेम्स नदी का है। इस नदी को जैविक रूप से डेड घोषित कर दिया गया था। सरकार और लोगों के प्रयासों से आज यह शहरी क्षेत्र से बहने वाली सबसे साफ नदियों में गिनी जाती है। दूसरा उदाहरण है यूरोप की राइन नदी का। इसे कभी सीवर ऑफ यूरोप कहा जाता था। निरंतर प्रयासों के बाद आज यह यूरोप की सबसे स्वच्छ नदियों में से एक है। तीसरा उदाहरण है दक्षिण कोरिया की हान नदी का दिया गया है। सियोल ओलंपिक के समय बहुत प्रदूषित थी। कमोबेश उसी तरह से, जैसे आज यमुना नदी है। लेकिन आज उस नदी को राष्ट्रीय धरोहर और गर्व के रूप में देखा जाता है।

प्राइमस की रिपोर्ट बियॉन्ड द फ्रॉथ के अनुसार अगर यमुना नदी की बेहतरी के लिए कुछ सिफारिशें दी जाएं तो वे सिफारिशें क्या होंगी?

प्राइमस की रिपोर्ट के अनुसार यमुना को पुनर्जीवित करने के लिए दो स्तरों की सिफारिशें की गई है। पहला संस्थागत सुधार है और दूसरा सुधार है सामुदायिक जुड़ाव। संस्थागत सुधारों में अंतर्राज्यीय यमुना कॉम्पैक्ट बनाना, सीवेज ट्रीटमेंट की क्षमता बढ़ाना, बाढ़ क्षेत्र का पुनर्जीवन, जल का दोबारा उपयोग नीति लागू करना और निगरानी प्रणाली मजबूत करना शामिल है। इसी तरह से सामुदायिक जुड़ाव में सिटीजन साइंस प्रोग्राम्स, समुदाय घाट प्रबंधन, यमुना अभियान, नुक्कड़ नाटक, सांस्कृतिक उत्सव, स्कूली जागरूकता कार्यक्रम और नियमित सफाई अभियान शामिल किए गए हैं। तीसरा पहलू है गवर्नेंस और मॉनीटरिंग। इसके लिए मजबूत वॉटर रीयूज पॉलिसी बनाई जा सकती है। इसकी नियमित निगरानी हो सकती है।

यमुना में झाग बनने की प्रकिया को हम देख सकते हैं। जिस तरीके से झाग दिखाई देता है, उससे पता चलता है कि कहीं कुछ गड़बड़ है। यमुना में झाग क्यों बनता है और इसका हम सभी के स्वास्थ्य पर क्या असर पड़ता है?

यह झाग डिटर्जेंट और सर्फेक्टेंट्स के कारण बनता है। जब यह प्रदूषक नालों के माध्यम से यमुना नदी में आता है तो नदी का पानी प्रदूषित हो जाता है। इसी वजह से झाग भी बनता है। यह झाग बेहद हानिकारक है। इससे त्वचा रोग, श्वसन रोग और आंत संबंधी बीमारियां हो सकती हैं। इस बात की भी आशंका है कि यमुना में भारी धातुएं पहुंच रही हैं। यह मुख्य रूप से बाढ़ के मैदान में होने वाली खेती के कारण हो रहा है। हमने किसानों से जब बात की तो उन्होंने बताया कि वह लोग यमुना का पानी सीधे सिंच. ाई के लिए नहीं इस्तेमाल कर रहे हैं। इसकी जगह वह सबमर्सिबल पाइप से पानी ले रहे हैं। यह पानी हमारी फूड चेन में पहुंच रहा है। उसी से हमारे शरीर में कहीं न कहीं भारी धातुएं पहुंच रही हैं। सरकार योजना ला रही है। इसमें विकेन्द्रीकृत ट्रीटमेंट प्लांट और बाढ़ क्षेत्र का पुनर्जीवन शामिल है। हम सभी को भी व्यक्तिगत स्तर पर सोचना होगा कि हम यमुना नदी की बेहतरी के लिए क्या योगदान दे सकते हैं। समाज का हर एक व्यक्ति इस तरह से सोचे तो आने वाले समय में निश्चित रूप से बड़ा बदलाव आ सकता है।

समितियों ने बारी–बारी से किया अपना ओरिएंटेशन

कोर्स के साथ रेडियो तरंग में स्किल सीखें

नई दिल्ली। जहां कोई नहीं पहुंच सकता वहां रेडियो ने आज भी अपनी जगह बनाई हुई है। अपनी बातों को समाज तक पहुंचाने के लिए रेडियो से अच्छा माध्यम कोई नहीं है। यह बात राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के संयोजक प्रो.राकेश कुमार ने 26 अगस्त 2025 को आयोजित रेडियो तरंग 90.0 एफएम के ओरिएंटेशन में कही। पीपीटी के जरिए एडिटिंग रूम, प्रोसेसिंग रूम, लाइव रूम, रिकॉर्डिंग रूम की जानकारी विद्यार्थियों से साझा की। विभाग की ओर से आयोजित एक महीने के रेडियो कोर्स की डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई।

हिंदी विभाग की प्रो. अर्चना गौड़ ने बताया कि महाविद्यालय कोर्स के साथ रेडियो में स्किल सीखने और स्किल को निखारने का अवसर उपलब्ध कराता है। मेजर डिग्री, माइनर डिग्री और इंटर्नशिप भी उपलब्ध कराता है। आप सब ऑडिसन में शामिल हों और अपने को निखारें। इस मौके पर रेडियो तरंग की फरजीन सुलतान, हिंदी पत्रकारिता के डॉ. अटल तिवारी, डॉ. सीमा झा, डॉ. प्रदीप कुमार, डॉ. निशा सिंह, कंप्यूटर साइंस के डॉ. अरुण कुमार सहित विद्यार्थी शामिल रहे।

मंच से विद्यार्थियों को सीखना चाहिए

नई दिल्ली। एंकरिंग केवल मंच का संचालन ही नहीं बल्कि पूरी संस्था की आवाज होती है। यह बात समिति के एंकर व कंटेंट राइटर प्रसून कुमार ने राम लाल आनंद महाविद्यालय में 2 सितंबर 2025 को अंदाज के ओरिएंटेशन में कही। समिति ने एक वर्ष की यात्रा की डॉक्यूमेंट्री दिखाई। कई विद्यार्थियों ने कहानी, गीत व कविताएं सुनाईं। संयोजिका प्रो. मुक्ता दत्ता मजूमदार और सह संयोजिका डॉ. दीपशिखा सहित विद्यार्थी उपस्थित रहे।

मिलकर सीखें और आगे बढ़ें

नई दिल्ली। विद्यार्थी सक्षम हों या विशेष जरूरत वाले, साथ मिलकर सीखें और साथ आगे बढ़ें। यह बात सुगम समिति की संयोजिका डॉ. सोमा पटनायक ने राम लाल आनंद महाविद्यालय में 1 सितंबर 2025 को समिति के ओरिएंटेशन में कही। विद्यार्थियों को पांच समूह में बांटकर तीन प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। पहली क्विज, दूसरी ब्लाइंडफोल्ड गेम और तीसरी बैनर की अनोखी बात पता लगाना था। सह संयोजक डॉ. कप्तान और विद्यार्थी मौजूद रहे।

इवेंट मैनेजमेंट और टीमवर्क सीखें

नई दिल्ली। महाविद्यालय के कार्यक्रमों में इवेंट मैनेजमेंट एंड फंक्शन कमेटी अपनी भूमिका निभाती है। यह बात सह संयोजिका डॉ. सुनीला हुडा ने राम लाल आनंद महाविद्यालय में 29 अगस्त 2025 को ओरिएंटेशन में कही। समिति के अध्यक्ष ने बताया इस कमेटी से जुड़कर विद्यार्थी इवेंट मैनेजमेंट, संचार और टीमवर्क को सीख सकते हैं। कमेटी संयोजिका प्रो. मुक्ता दत्ता मजूमदार सहित कई शिक्षक व विद्यार्थी इस दौरान उपस्थित रहे।



सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के ओरिएंटेशन में विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने लिया हिस्सा।

नॉर्थईस्ट की संस्कृति व परंपरा है विशिष्ट

नई दिल्ली। नॉर्थ ईस्ट के विद्यार्थी दिखने में भले ही अलग हों, लेकिन उनका रहन–सहन शांतिपूर्ण है। यह डॉ. प्रभास पांडे ने 25 अगस्त 2025 को महाविद्यालय की नॉर्थ ईस्ट स्टूडेंट्स वेलफेयर सोसाइटी के ओरिएंटेशन में कही। उन्होंने कहा कि नॉर्थ ईस्ट की संस्कृति, परंपरा और खानपान अत्यंत विशिष्ट है। सह संयोजिका लिमिवोन जिमिक ने बताया कि यह सोसाइटी विद्यार्थियों को उनकी संस्कृति से जुड़े रहने का अवसर प्रदान करती है।

योग से जुड़िए

नई दिल्ली। महाविद्यालय की योगा एंड मेडिटेशन समिति निर्वाण ने 20 अगस्त 2025 को ओरिएंटेशन रखा। शुरुआत विद्यार्थियों के योग प्रदर्शन से हुई। समिति की डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई। योग अंजली और वार्षिक उत्सव योग अमृता आयोजनों की तस्वीरें विद्यार्थियों से साझा की गईं। संयोजक शिखा वर्मा ने 21 अगस्त 2025 को चयन प्रक्रिया को स्पष्ट किया। चयन प्रक्रिया में प्रतिभागियों से योग के कई आसन कराए गए। 11 नए विद्यार्थियों का समिति में चयन हुआ। चयन प्रक्रिया में प्रो. सीमा गुप्ता उपस्थित रहीं।

सुचिता समिति ने दिया स्वच्छता संदेश

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की सुचिता द क्लीनेंस एंड हाइजीन समिति ने 26 अगस्त 2025 को ओरिएंटेशन रखा। सह संयोजिका डॉ. प्रीति देवी ने बताया कि हमारी समिति के प्रयास से महाविद्यालय के विभाग भी स्वच्छता अभियान से जुड़े हैं। मुख्य भूमिका गणित विभाग, इतिहास विभाग, अर्थशास्त्र विभाग और बी.ए. प्रोग्राम समिति के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की रही है। शिक्षकों व विद्यार्थियों ने स्वच्छता अभियान चलाया।

सेवा और जागरूकता

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की समिति राष्ट्रीय सेवा योजना ने 21 अगस्त 2025 को ओरिएंटेशन रखा। डॉ. अनुराग शर्मा ने बताया कि समिति नियमित रूप से समाज में जागरूकता फैलाने और सहयोग करने का कार्य करती है। उन्होंने बताया कि समिति ने कई रचनात्मक और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए। इस दौरान वर्ष 2025 में प्रकाशित नवचेतना पत्रिका का विमोचन किया गया। साथ ही समिति ने डॉक्यूमेंट्री दिखाई। इस दौरान प्राचार्य प्रो.राकेश कुमार गुप्ता ने समिति के कार्यों की प्रशंसा की।

प्रस्तुति : खुशबू, निधि, शिवानी, तबा आका, दीपक, शिवम यादव

स्टैम्प डिजाइनिंग में दिखाई प्रतिभा

भारती

नई दिल्ली। संयुक्त राष्ट्र के 80 साल पूरे होने पर भारत सरकार की तरफ से आयोजित स्टैम्प डिजाइनिंग कॉम्पिटिशन में राम लाल आनंद महाविद्यालय की इनारा सोसाइटी ने हिस्सा लिया। 6 अगस्त को हुई प्रतियोगिता की थीम बहुपक्षवाद और संयुक्त राष्ट्र पर आधारित थी।

कॉम्पिटिशन में 11 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिसमें पांच प्रतिभागियों की कला को सरकारी पोर्टल पर अपलोड किया गया। कॉम्पिटिशन में तीन विजेता रहे। पहले स्थान पर प्राजक्ता प्रधान, दूसरा आकर्ष मौर्य और तीसरा स्थान अभिषेक नंदी ने हासिल किया। विजेताओं को कैश प्राइस दिया गया। संयोजिका प्रो. मुक्ता दत्ता मजूमदार सहित कई शिक्षक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

विद्यार्थियों को फोन हैक से बचने के दिए गए टिप्स

भूमिका

नई दिल्ली। डाटा ही साइबर फ्रॉड की जड़ है। यह बात शुभम त्रिपाठी ने राम लाल आनंद महाविद्यालय में 27 अगस्त 2025 को सेंटर ऑफ साइबर एंड फोरेंसिक के ओरिएंटेशन में कही। शुभम त्रिपाठी ने कहा कि फ्रॉड जीपीटी की मदद से जिस व्यक्ति पर अटैक करवाना है उसका यूजर नेम डालकर उस व्यक्ति पर 100 तरीके से अटैक करने के विकल्प आ जाते है। दो या तीन किलोमीटर पर ब्लूटूथ का प्रयोग कर रहे व्यक्ति की जानकारी का पता भी हैकर लगा सकते हैं।

उन्होंने उदाहरण देते हुए विद्यार्थियों का फोन नंबर और ईमेल आईडी मांग कर उनके फोन के पासवर्ड, एड्रेस, आधार कार्ड नंबर की जानकारी बताई। उन्होंने कहा कि कैसे हैकर उनके नंबर और ईमेल आईडी से ही उनका फोन हैक कर सकते हैं। फोन में अनजान वेबसाइट, कुकीज और थर्ड पार्टी ऐप्स का प्रयोग नहीं करना चाहिए। हमें ऐप्स का स्ट्रांग पासवर्ड रखना चाहिए। चैट जीपीटी पर गिबली फोटो के जरिए भी हमारी जानकारी हैकर पता लगा सकता है। समिति की संयोजिका सुश्री साक्षी खन्ना ने बताया कि हम और विद्यार्थी साइबर सिक्योरिटी को बढ़ावा देते है। साइबर सिक्योरिटी को हम साइबर अवेयरनेस महीना भी मनाते हैं। डिजिटल फोरेंसिक पर पिछले वर्ष विद्यार्थियों ने अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का प्रबंधन किया था। संचालन सौरव और कशिश ने किया।

कॉर्पोरेट जगत में दिखने का हुनर

समर्थ

नई दिल्ली। अमन कपूर ने विद्यार्थियों से कॉर्पोरेट जगत में अपनी मार्केटिंग कैसे कर सकते हैं, इस विषय पर गहन चर्चा की। उन्होंने विद्यार्थियों को पर्सनल ब्रांडिंग को लेकर चार मुख्य चीजें बताई, जिसमें स्पीकर पर्सनॉलिटी, पॉडकास्ट मेकिंग, प्रमोशन ब्रांडिंग और स्क्रिप्ट मेकिंग के बारे में बताया। यह कार्यक्रम राम लाल आनंद महाविद्यालय के प्लेसमेंट सेल पाथवे समिति ने 20 अगस्त 2025 को आयोजित करवाया।

सेमिनार में 70 से अधिक विद्यार्थी मौजूद रहे और वक्ता से विषय से जुड़े कई सवाल पूछे। आयोजन के दौरान पाथवे समित के संयोजक डॉ. पवन कुमार और सह–संयोजक सुश्री सृजना सिंह सहित अन्य विभाग के विद्याथी उपस्थित रहे।

आरएलएसी में सुबह की शुरुआत योग के साथ

आकाश

- महाविद्यालय में आरोग्य कार्यशाला का आयोजन
- शैक्षणिक तनाव और स्वास्थ्य में संतुलन करना

नई दिल्ली। योग और ध्यान की समझ को गहरा करने के लिए निर्वाण समिति ने राम लाल आनंद महाविद्यालय में 18 से 30 अगस्त 2025 तक आरोग्य कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें सोसाइटी के प्रशिक्षित संकाय सदस्यों के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों की भागीदारी देखी गई। कार्यशाला महाविद्यालय परिसर के फ्रंट लॉन में हुई।

कार्यशाला की शुरुआत अपने को तैयार करने के साथ होती है। इसके बाद सूर्य नमस्कार के साथ अनेक आसान कराए जाते हैं। पीठ झुकाना, आगे झुकना, हाथ का संतुलन, पैर संतुलन के साथ ही सत्र में ताड़ासन, त्रिकोणासन, वृक्षासन और धनुरासन, हलासन और चक्रासन जैसे अनेक आसन कराए जाते हैं। सत्र का अंत शवासन और ॐ मंत्र के जाप के साथ होता था। कार्यशाला में शैक्षणिक तनाव और व्यक्तिगत स्वास्थ्य के बीच संतुलन बनाए रखने का महत्व समझाया। इसमें योग को एकाग्रता, अनुशासन और सकारात्मक मानसिकता विकसित करने के एक शक्तिशाली साधन के रूप में भी रेखांकित किया। समिति के मेंटर दिग्विजय आयुष और अध्यक्ष राघवी शर्मा ने कार्यशाला का प्रबंधन किया।

नाटक के जरिए भ्रष्टाचार और अपराध पर प्रहार

खुशी प्रजापति

नई दिल्ली। नई शुरुआत, नए सत्र और नए जोश के साथ महाविद्यालय की सभी सोसाइटी अपना परिचय देने में लगी हैं। इन्हीं में से एक सोसायटी है हसरतें। हर साल नए विद्यार्थी हसरतें से जुड़ते है। इसी प्रक्रिया में 19 अगस्त 2025 को उसने परिचय समारोह रखा। इसकी शुरुआत नुक्कड़ नाटक से हुई, जिसका मुद्दा धर्म और राजनीति का घालमेल रहा। नाटक के जरिए बताया कि कैसे देश में राजनीति के नाम पर समुदायों को आपस में लड़ाया जाता है। राष्ट्रवाद में एकता और आतंकवाद के खिलाफ एकजुटता का संदेश दिया। नाटक में भ्रष्टाचार, अपराध व राजनीतिक मसलों को दिखाया गया। नाटक के बाद एंफीथिएटर में स्टेज प्ले हुआ, जिसका मुद्दा था–ताकत के आगे भ्रष्ट हुआ आम आदमी।

प्ले के माध्यम से विद्यार्थियों तक यह संदेश पहुंचाया कि जब किसी आम आदमी के पास ताकत आती है तो वह कैसे उसके नशे में चूर होकर सभी रिश्ते नाते तोड़ देता है। अपने को भ्रष्टाचार के रास्ते पर ले जाता है। जब उसे अपनी गलती का अहसास होता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। इस दौरान दर्शकों के रूप में विद्यार्थी मौजूद रहे।

सही–गलत तय करने में मददगार मानव मूल्य

स्नेहा झा, आलोक यादव

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय में 1 सितंबर 2025 को सेंटर फॉर ह्यूमन वैल्यू, एथिक्स एंड लाइफ स्किल्स ने जूम प्लेटफॉर्म पर ओरिएंटेशन करवाया, जिसका विषय ह्यूमन वैल्यू रहा। इसमें शामिल हेल्थी एजिंग इंडिया की सीईओ डॉ. मंजरी चतुर्वेदी ने बताया कि राजनीति में टकराव इसलिए होता है क्योंकि लोग अपने स्वार्थ को प्राथमिकता देते हैं। नेता अगर मानव मूल्यों को अपनाएं तो सही और गलत का फैसला करना आसान हो सकता है।

उन्होंने कहा कि व्यक्ति को ज्यादा से ज्यादा अपने ऊपर काम करना चाहिए, जिससे वह बेहतर बन सके। हर दिन कुछ नया सीखना और नया पढ़ना चाहिए। जनरेशन गैप, जेन जे और जेन अल्फा की विचारधारा पर उनका कहना था कि नई पीढ़ी की सोच, तकनीक और जीवनशैली पहले से बिल्कुल अलग है। युवा आज कल साइड हसल यानी मुख्य काम के साथ अतिरिक्त काम करके भी अपनी पहचान बनाना चाहते हैं।

- राजनीति में मानवीय मूल्यों को अपनाया जाए तो आसानी होगी
- लोगों को अपने ऊपर काम करना चाहिए
- डॉ. मंजरी चतुर्वेदी ने दी मानव मूल्यों को अपनाने की सलाह



डॉ. मंजरी चतुर्वेदी ने विद्यार्थियों को स्क्रीन राइटर और कॉमेडियन जर्ना गर्ग का वीडियो दिखाया, जिससे जीवन के प्रति सकारात्मकता और हास्यबोध को समझाया गया। इसी के साथ दलाईलामा का वीडियो भी दिखाया गया, जिसमें भौतिक दुनिया और मानव मूल्यों के बीच संतुलन पर जोर दिया गया।

उन्होंने बताया कि आधुनिक समय में युवाओं में अपने बुजुर्गों का अनादर करना एक बड़ी समस्या के रूप में उत्पन्न हो रही है। जीवन मूल्यों को अपना कर इस प्रवृत्ति को रोका जा सकता है। सत्र के अंत में विद्यार्थियों ने मुख्य वक्ता से सवाल पूछे। उन्होंने विद्यार्थियों को सीख देते हुए कहा कि कि जीवन में हमेशा दो रास्ते होते हैं–एक आसान और एक कठिन। इंसान को चुनाव करना होता है कि कौन सा रास्ता सही है। सेंटर की संयोजक डॉ. रीटा जैन सहित महाविद्यालय के कई शिक्षक और बड़ी संख्या में विद्यार्थी ऑनलाइन उपस्थित रहें।

परीक्षा के लिए समय प्रबंधन और अभ्यास पर दिया जोर

अविनाश सिंह

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय के प्लेसमेंट सेल पाथवे ने 26 अगस्त 2025 को विद्यार्थियों को कैट, सीयूईटी पीजी और जीमैट जैसी परीक्षाओं को पास होने के लिए कार्यक्रम आयोजित करवाया। कॅरिअर काउंसलर रमेश मिश्रा ने विद्यार्थियों को कैट परीक्षा के बारे में बताया कि यह परीक्षा मुख्य रूप से तीन खंडों में विभाजित होती है। पहला मौखिक क्षमता और समझ, दूसरा डाटा व्याख्या और तार्किक तर्क, तीसरा मात्रात्मक क्षमता। सही रणनीति, उचित समय प्रबंधन और नियमित अभ्यास से इन परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करना संभव हो जाता है।

उन्होंने विद्यार्थियों को अन्य प्रवेश परीक्षाओं का भी संक्षिप्त परिचय दिया। उन्होंने विद्यार्थियों को तैयारी के लिए व्यावहारिक तकनीकें समझाई और साझा कीं। सेमिनार में बताया गया कि गति, सटीकता और आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए विद्यार्थियों को किस तरह तैयारी करनी चाहिए। इस मौके पर प्लेसमेंट सेल पाथवे के संयोजक डॉ. पवन कुमार, समिति के सदस्य सहित अन्य विभाग के शिक्षक और बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

राज्य चैंपियनशिप में आरएलएसी चमका

आस्था त्रिपाठी

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की योगासन टीम ने दो दिवसीय 23वीं दिल्ली राज्य योगासन चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन करते हुए महाविद्यालय का नाम रोशन किया। इसके साथ महाविद्यालय के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों ने अलग अलग श्रेणियों में 20 पदक व 2 ट्रॉफी जीतकर पुरुस्कार प्राप्त किया। आर्टिस्टिक टीम प्रतियोगिता में आरएलएसी ने तालमेल और प्रस्तुति के बल पर प्रथम स्थान प्राप्त कर ट्रॉफी अपने नाम की। रिदमिक पेयर योगासन प्रतियोगिता में सिमरन और शुभी ने प्रथम स्थान हासिल किया। इसके साथ अंशिका और सोनाली ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। पारंपरिक योगासन प्रतियोगिता में टीम ने अच्छा प्रदर्शन किया। इसमें शुभी और सिमरन ने चौथा स्थान प्राप्त किया। अंशिका ने पांचवां स्थान व सोनाली और रुचिता ने छठा स्थान तथा राघवी ने सातवें नंबर पर कब्जा जमाया। आर्टिस्टिक सोलो श्रेणी में प्रिया ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया, जबकि सोनाली और शुभी ने तृतीय स्थान हासिल किया। इसके अलावा अंशिका और रुचिता ने चौथा स्थान प्राप्त कर प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभा साबित की।

अपनी मेहनत, अनुशासन और समर्पण के बल पर आरएलएसी टीम ने महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया है। साथ ही आने वाले विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बनी है। विद्यार्थियों की इस उपलब्धि पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने पूरी टीम को बधाई देते हुए इसी तरह से मेहनत कर अपना और संस्था का नाम रोशन करने की बात कही है। महाविद्यालय की समिति निर्वाण की संयोजक सुश्री शिखा वर्मा ने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया है।



आरएलएसी के विजेता विद्यार्थी अपने प्रमाण पत्र और पदक के साथ।



राज्य योगासन चैम्पियनशिप में पदक जीतने वाले राम लाल आनंद महाविद्यालय के विद्यार्थी।

आरएलएसी ने जीती ट्रॉफी

भारती बल

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की टीम ने 6 और 7 सितंबर 2025 को आयोजित दिल्ली स्टेट योगासन चैंपियनशिप 2025 में शानदार प्रदर्शन करते हुए महाविद्यालय का नाम रोशन किया। दो दिवसीय प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने अलग अलग श्रेणियों में ट्रॉफी जीती। रिदमिक योगा प्रतियोगिता में पहला स्थान छात्र वर्ग में मोहित लखेरा और अर्पित कुमार मांझी ने हासिल किया। वहीं छात्रा वर्ग में प्रिया और प्रियांशी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया।

आरएलएसी गौरव

ट्रेडीशनल टीम प्रतियोगिता में आरएलएसी टीम के दिग्विजय आयुष, मोहित लखेरा, अर्पित कुमार मांझी, उदय कौशिक और रोशन राज ने दूसरा स्थान हासिल किया। डॉ. शिखा वर्मा ने ट्रेडीशनल इंडीविजुअल प्रतियोगिता में शानदार प्रस्तुति देते हुए तीसरा स्थान प्राप्त किया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने इस अवसर पर विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि यह उपलब्धि विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत और शिक्षकों के मार्गदर्शन का परिणाम है। उहोंने विश्वास जताया कि भविष्य में भी महाविद्यालय के विद्यार्थी राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा से महाविद्यालय का नाम रोशन करेंगे। उन्होंने कहा कि जब आप किसी काम को मन से करते हैं तो एक दिन अवश्य तरक्की के पायदान पर चढ़ते हैं। इसके लिए जरूरत होती है लगातार कर्म करते जाना।

खेल दिवस पर विद्यार्थियों ने दिखाई भागीदारी

उत्कर्ष

नई दिल्ली। खेल में कुछ समय बिताने से विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद साबित होगा। विद्यार्थियों को हर दिन एक घंटे मैदान पर खेलते हुए बिताना चाहिए। यह बात शारीरिक शिक्षा विभाग के प्रो. प्रदीप शर्मा ने राम लाल आनंद महाविद्यालय में राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष में आयोजित तीन दिवसीय खेल गतिविधियों के समापन पर 31 अगस्त को कही।

आयोजन का समय सुबह साढ़े सात से साढ़े आठ बजे रखा गया। विभाग ने महाविद्यालय के सभी विभागों के सहयोग से कार्यक्रम आयोजित किया। इसका विषय एक घंटे खेल के मैदान में रखा गया, जहां विद्यार्थी अपना पसंदीदा खेल खेल सकते हैं। तीन दिनों में विद्यार्थियों ने क्रिकेट, फुटबॉल, कबड्डी, वॉलीबॉल और खो–खो आदि खेल खेले। तीन दिवसीय आयोजन में प्रो. प्रदीप शर्मा और डॉ.विशाल गोस्वामी के साथ सभी खेलों के कोच और करीब तीन सौ विद्यार्थी मौजूद रहे।



हमें अच्छा पढ़ने की आदत डालनी होगी

नंदनी वार्ष्णेय

नई दिल्ली। वंस अपऑन ए कर्फ्यू और लल्लन स्वीट्स कविता की लेखिका सृष्टि चौधरी ने विद्यार्थियों को बताया कि यदि आप अच्छा लिखना चाहते हैं तो अच्छा पढ़ने की आदत डालनी होगी। आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस के बढ़ते प्रयोग को संदर्भित करते हुए उन्होंने बताया कि आप इससे सहायता ले सकते हैं लेकिन अन्य विकल्प के रूप में नहीं देख सकते।

महाविद्यालय की अंग्रेजी रचनात्मक लेखन सोसाइटी अभिव्यक्ति ने ओरिएंटेशन और लेखक सत्र के रूप में 20 अगस्त 2025 को आयोजन करवाया। ऑनलाइन प्रतियोगिता आयोजित की, जिसमें अरबिंदो महाविद्यालय के विजेता आदित्य सिंह को सृष्टि चौधरी की हाल ही में आई किताब 'शिमला अफेयर्स' पुरुस्कार के रूप में दी गई। इस मौके पर समिति संयोजिका डॉ. मीनाक्षी ब्रह्म, सह संयोजिका डॉ.लिमिवोन जिमिक व डॉ. उर्वशी कुहाड़ मौजूद रहीं।

'कैम्पस कनेक्ट' के सितम्बर अंक के विमोचन पर प्राचार्य ने पूछा–

अगले अंक की लीड खबर क्या होगी?

अंकेश

नई दिल्ली। 'कैम्पस कनेक्ट' के सितम्बर अंक का संपादक कौन है? अगले अंक की जिम्मेदारी कौन संभाल रहा है? पत्र किस सॉफ्टवेयर पर डिजाइन करते हैं? बड़े समाचार पत्रों में भी क्या इसी सॉफ्टवेयर पर काम होता है? अगले अंक के प्रथम पेज की लीड खबर क्या होगी, जैसे अनेक प्रश्न राम लाल आनंद महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने 'कैम्पस कनेक्ट' के सितम्बर अंक का विमोचन करते हुए संपादकीय टीम में शामिल दोनों विद्यार्थियों से किए, जिसके जवाब उन्होंने दिए।

प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने मासिक ई–न्यूजलेटर 'कैम्पस कनेक्ट' के सितंबर अंक का विमोचन 29 सितम्बर 2025 को किया। अंक की संपादक तृतीय वर्ष की छात्रा आस्था त्रिपाठी और उप संपादक द्वितीय वर्ष की छात्रा भारती बल हैं। दोनों ने विमोचन की औपचारिकता पूरी कराई। प्राचार्य ने बताया कि राम लाल आनंद महाविद्यालय को ऑल इंडिया स्तर पर एनआईआरएफ की रैंकिंग में 90वां स्थान प्राप्त हुआ है। दिल्ली विश्वविद्यालय में महाविद्यालय को 30वां स्थान मिला है। अगले अंक में इसकी खबर लेने का सुझाव उन्होंने दिया। हिंदी पत्रकारिता के प्रो. राकेश कुमार ने समाचार पत्र में किए जा रहे बदलावों से अवगत कराया। प्राचार्य ने इसी तरह से काम करते हुए आगे बढ़ने के लिए दोनों विद्यार्थियों को प्रेरित किया।



प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता व हिंदी पत्रकारिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने किया विमोचन।

संस्कृति को जीवंत रखने का आंदोलन है स्पिकमैके

भारत

नई दिल्ली। स्पिकमैके केवल एक संस्था नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति और विरासत को जीवंत रखने का एक आंदोलन है। इस मंच पर फोक डांस, थिएटर, इंडियन क्लासिकल म्यूजिक, योग, ध्यान और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से युवाओं को जड़ों से जोड़ने का कार्य किया जाता है। यह बात मुख्य वक्ता अंशुमान जैन ने राम लाल आनंद महाविद्यालय में 2 सितंबर 2025 को स्पिकमैके के ओरिएंटेशन में कही।

स्पिकमैक समिति की सह संयोजिका डॉ. शची मीणा ने बताया कि महाविद्यालय में पांच दिवसीय कार्यक्रम विरासत में विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति की विविध झलकियां दिखाई जाती हैं। इसमें फिल्म स्क्रीनिंग, हेरिटेज वॉक, आध्यात्मिक वार्तालाप, भारतीय शास्त्रीय नृत्य और संगीत शामिल होता है।

उहोंने योग के बारे में विद्यार्थियों को बताया कि योग हमारे लिए बहुत लाभदायक होता है। योग करने से हमारे मन और दिमाग को शांति मिलती है। यह हमें अपने जीवन में रोज करना चाहिए। कार्यक्रम में भारतीय कला, संगीत और परंपराओं की झलक को डॉक्यूमेंट्री के जरिए विद्यार्थियों को दिखाया गया।



राम लाल आनंद महाविद्यालय की स्पिकमैके टीम के साथ मुख्य वक्ता अंशुमान जैन।

राम लाल आनंद महाविद्यालय की स्पिकमैके टीम ने नए विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से भाग लेने को कहा। इससे विद्यार्थी केवल अपने ज्ञान को नहीं, बल्कि भारतीय परंपराओं और मूल्यों को भी आत्मसात कर सकेंगे। इस मौके पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, समिति के सलाहकार प्रो. राकेश कुमार, समिति की संयोजिका डॉ.दीप्ति भारद्वाज सहित कई शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

संरक्षक मंडल
प्राचार्य
प्रो. राकेश कुमार गुप्ता
विभागाध्यक्ष
प्रो. राकेश कुमार
परामर्शदाता
डॉ. अटल तिवारी
संपादक
भारती बल
उपसंपादक
आकाश, खुशी